युक्रांद

युग क्रांति दर्शन

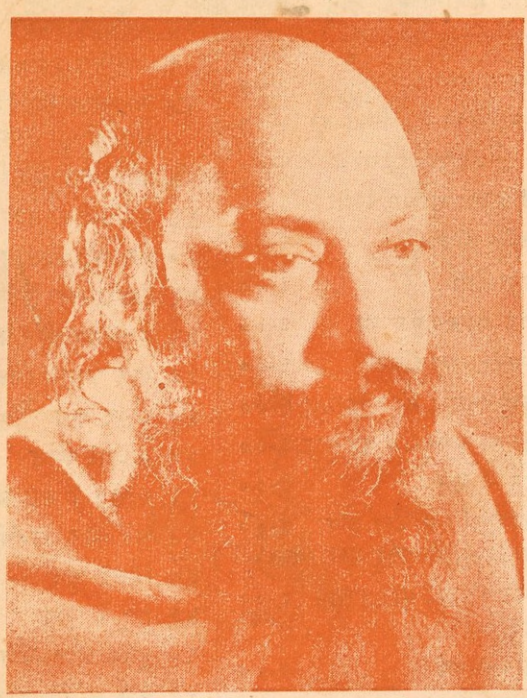

जन्म-दिवस विशेषांक

११ दिसंबर, १९७३

मूल्य : एक रुपया

भगवान रजनीश-साहित्य

१	ताओ उपनिषद्	४०-००
२	गीता-दर्शन (अध्याय६)	३०-००
३	महावीर मेरी दृष्टि में	३०-००
४	महावीर वाणी भाग १	३०-००
५	महावीर वाणी भाग २	३०-००
६	जिन खोजा तिन पाइयां	२०-००
७	मैं मृत्यु सिखाता हूं	२०-००
८	इशावास्योपनिषद्	१५-००
९	निर्वाणोपनिषद	१५-००
१०	गीता-दर्शन अध्याय: ७	१२-००
११	प्रेम है द्वार प्रभु का	९-००
१२	घाट भुलाना बाट बिनु	७-००
१३	नव-संन्यास क्या ?	७-००
१४	समुन्द समाना बुंद में	७-००
१५	सूली ऊपर सेज पिया की	७-००
१६	सत्य की पहली किरण	६-००
१७	मैं कहता आंखन देखी	६-००
१८	क्रांति बीज	६-००
१९	अन्तर्वीणा	६-००
२०	ढाई आखर प्रेम का	६-००
२१	प्रभु की पगडंडियां	६-००
२२	संभावनाओं की आहट	६-००
२३	संभोग से समाधि की ओर	६-००
२४	प्रेम के फूल	५-००
२५	अस्वीकृति में उठा हाथ (भारत-गांधी और मेरी चिंता)	५-००
२६	ज्यों की त्यों धरि दीन्हीं चदरिया	५-००
२७	साधना-पथ	५-००
२८	अन्तर्यात्रा	५-००
२९	सत्य की खोज	५-००
३०	मिट्टी के दिए	५-००
३१	मुल्ला नसरुद्दीन	५-००
३२	गहरे पानी पैठ	५-००
३३	काम-योग धर्म और गांधी	४-००
३४	समाजवाद से सावधान	४-००
३५	शून्य क पार	४-००
३६	पथ के प्रदीप	४-००
३७	शांति की खोज	३-५०
३८	मैं कौन हूं	३-००
३९	शून्य की नाव (सत्य का सागर शून्य की नाव)	३-००
४०	नए संकेत	२-००
४१	पथ की खोज (सिंहनाद का नया संस्करण)	२-००
४२	अज्ञात की ओर	२-००
४३	सत्य के अज्ञात सागर का आमंत्रण	२-००
४४	क्रांति की वैज्ञानिक प्रक्रिया	१-५०
४५	ज्योतिष : अद्वैत का विज्ञान	१-५०
४६	ज्योतिष : अर्थात अध्यात्म	१-५०
४७	जनसंख्या विस्फोट : समस्या और समाधान	१-५०
४८	ध्यान एक वैज्ञानिक दृष्टि	१-५०
४९	प्रगतिशील कौन	१-५०
५०	प्रेम और विवाह	१-५०
५१	विद्रोह क्या है ?	१-५०
५२	मेडीसिन और मेडीटेशन	१-२५
५३	सारे फासले मिट गए	१-२५
५४	अमृत कण	१-००
५५	अहिंसा दर्शन	१-००
५६	अज्ञात के नए आयाम	१-००
५७	धर्म और राजनीति	१-००
५८	बिखरे फूल	१-००
५९	मन के पार	१-००
६०	युवक और यौन	१-००
६१	कुछ ज्योतिर्मय क्षण	१-००
६२	अवधिगत संन्यास	०-३०
६३	क्रांति की नई दिशा : नई बात (नारी और क्रांति)	०-३०
६४	क्रांति के बीच सबसे बड़ी दीवार (भारत के साधु-सन्त)	०-३५
६५	संस्कृति के निर्माण में सहयोग (जीवन जागृति केन्द्र : क्या, क्यों, कैसे ?)	०-३०

११ दिसंबर, १९७३

भगवान रजनीश का ४२वां जन्म-दिवस

प्रभो !

कामना है कि

आज का यह दिन

हजार - हजार बार आये

और हर बार हम, यों ही,

तेरी निगाहों के सामने नाचते-गाते

आनन्दोत्सव मनाते रहें !

●

स्वामी अगेह भारती

जबलपुर

○

भगवत्-काव्य के आनन्द में खोई—मा योग मीरा, जूनागढ़ के साथ सभी प्रेमी-पिपासुओं का, भगवान श्री के जन्म-दिवस पर चरणों में शत्-शत् वंदन

○

★

गाओ प्रभु के गीत रे !

★

झूम-झूम के नाचो गाओ
खुशी मनाओ
बजा प्रीत संगीत रे
गाओ प्रभु के गीत रे !

उर मरु भूमि जन्मों जब तरसी
तब है प्रभु कृपा अब बरसी
मिली शरण की शीत रे
गाओ प्रभु के गीत रे !

क्या अद्भुत सौभाग्य हमारा
मिला जनम हमको जब आया
'नीश रूप में ईश रे
गाओ प्रभु के गीत रे !

किसे-किसे मिलता है यह वर
'वीर बुद्ध सत्संग का अवसर
जुड़ी प्रभु से प्रीत रे
गाओ प्रभु के गीत रे !

इतरायेंगे हम जब हैं प्रभु जी
किसी के बन्धु, किसी के संगी
और किसी के मीत रे
गाओ प्रभु के गीत रे !

छोड़ो दुख चिन्ता पागलपन
झुका लो अपना करके समर्पण
'नीश चरण में शीश रे
गाओ प्रभु के गीत रे !

झूम-झूम के नाचो गाओ
धूम मचाओ
"प्रभु-जन्म-दिन" मीत रे
गाओ प्रभु के गीत रे !
गाओ खुशी के गीत रे !!

□ *स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती*, गाडरवारा

रजनीश और कालू के.....

जन्म-दिवस तेरा एक पावन पर्व हुआ,
दुनियां ने खूब मनाया मैं हैरान रहा,
गतिशील सभी भगवान हुए रजनीश संग
चलने को मैं भी चला मगर शैतान रहा।
तुलनामय विश्लेषण निष्पक्ष किया मैंने,
चंचल स्वभाव ने द्वार जोर से खटकाया
सब देख रहे थे ज्योतिर्मय प्रकाश-पुंज
ये बात और है मुझे अंधेरा रास आया।

इस भीड़ भरे मेले में सदा अकेले रह—
देखा अद्भुत अन्तर बाहर एक नाटक था,
लोगों के मन के द्वार खुले की चर्चा थी,
मैंने भी झांका बन्द मेरा ही फाटक था।
दुनियां भर के ऐबों से मेरा नाता है,
माया के बन्धन मुझे बहुत ही भाते हैं,
जब भी खोया हूं तेरे दिव्य खयालों में—
अदृश्य और अनजाने सुख आ जाते हैं।

तेरी वाणी से परे मौन-संकेतों को—
अपने तईं मैंने समझा है कुछ जाना है,
तूने तो जीवन सम्यक राग सँवारा है—
पर मुझे गले अपने से सरगम गाना है।
स्वाभाविक स्तर से मैं सदा दुआ करता,
तुझसे भी अपनेवत ऐसा कुछ हो जाए—
जिससे कि तेरा मोक्ष असंभव बना रहे,
धरती पर नर्क-स्वर्ग-मोक्ष एक हो जाए।

□ इन्द्रदेव चोपरा 'कालू'
जबलपुर

• सर्व संतुलन–दिव्य सिद्धि •

तूने कहा है—
"जीवन है दो अतियों के मध्य का संतुलन"
तूने जिया है
देश, काल, पात्र सर्वत्र का ही संतुलन
मध्यप्रदेश नाभि देश संतुलन प्रदेशों का (संतुलन : राजनीतिक)
जबलपुर—दिव्यपुर, सम्मिलन क्षेत्रों का (सामाजिक)
भूविज्ञान में २१ मार्च है (वैज्ञानिक
दिवस निशि का संतुलन एवं
गतिविज्ञान में भंवर है भौगोलिक)
दो विपरीत शक्तियों का संतुलन।
ऋतु है बसन्त की शीत-उष्ण संतुलन। (प्राकृतिक)
आसन स्थल—वहां
जहां से बोधि-वृक्ष संतुलित रूप से,
ऊपर उठने के लिये जड़ों को नीचे ले जाता है।
और बन जाता है संगम साधनाओं...सिद्धियों का। (आध्यात्मिक)
उस मध्य रात्रि के बाद
जहां सब सोते थे.. योगीश जागता रहा
ज्ञान और आनन्द के जाम (पात्र) पीता रहा (विरोधाभास)
हम भव भंवर में फंसे रहे
तू भव भंवर ताल तर गया
हम २१ वर्ष बाद नागरिकता का अधिकार पाते हैं
तू २१ वर्ष में (२१ मार्च को)
भगवत्ता को पा गया।

□ *अवधेश श्रीवास्तव 'मित्र'*
घंसोर, सिवनी (म.प्र.)

समर्पण

गीत में गाऊं तुम्हें, मैं किस तरह मेरे प्रभू
प्रीति में पाऊं तुम्हें मैं किस तरह मेरे प्रभू

मैं समर्पित हूं तुम्हारी प्रार्थना के फूल बन
और तो ध्याऊं तुम्हें मैं, किस तरह मेरे प्रभू

मैं निछावर हूं तुम्हारी हर कला, हर रूप पर
और तो चाहूं, तुम्हें मैं किस तरह मेरे प्रभू

मैं निमज्जित हूं तुम्हारे स्नेह-पारावार में
लीन हो जाऊं तुम्हीं में, किस तरह मेरे प्रभू

भक्ति का मैं अर्घ्य अर्पित कर रहा हूं रात-दिन
भावना भाऊं तुम्हें मैं, किस तरह मेरे प्रभू

वार दीं सब कामनाएं—एक तेरी दृष्टि पर
अब तुम्हें लाऊं हृदय में किस तरह मेरे प्रभू

बन गई है जिन्दगी ही, अर्चना-आराधना
चीर दिखलाऊं स्वयं को किस तरह मेरे प्रभू

गजल

□ *स्वामी योग प्रीतम*
प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग
राजकीय महाविद्यालय
भीलवाड़ा (राजस्थान)

रजनीश तुम्हें शत-शत प्रणाम !

□ साधु स्वधर्म सरस्वती
[आर० एस० केशरी]

विराट चिरन्तन जीवन के
अमर उद्घोषक
आचार्य रजनीश
तुम्हें शत-शत प्रणाम !

तुमने उस विराट जीवन का
रहस्यमार्ग
खोल दिया है
जो सदा है, जो सदा रहेगा
जो अब तक अनजाने में
जो अहंकार की कन्दराओं में
बन्द पड़ा था

तुमने उस 'दिव्यता' की
कुंजी दी है
जिसकी सहायता से
हम कृष्ण के 'परमधाम' और
'क्राइस्ट' के 'पैराडाइज' का
दरवाजा खोल सकते हैं—

जिसकी सहायता से आदमी
भगवान बुद्ध का 'निर्वाण'
सुलभ कर सकता है

आदमी, जो अब तक अंधकार में,
भटक रहा था—
तीर्थंकरों के मार्ग से
गुजर सकता है

लाओत्से के 'ताओ' में
प्रवेश कर—
सत्-चित्-आनन्द की स्थिति
उपलब्ध कर सकता है...

हे ! आज के महान सन्त
तुमने ठीक ही कहा है—
मर जाना उतना बुरा नहीं है
जितना मरे हुए
जिन्दा रहना बुरा है—

और यह कि
हम स्वयं को धोखा देते-देते
धोखे में
इस कदर डूब गये हैं—

कि हमें यह ध्यान ही नहीं होता
कि दूसरे लोग भी
अपने साथ ऐसा ही धोखा
कर रहे हैं।

हां, मैं भगवान हूं

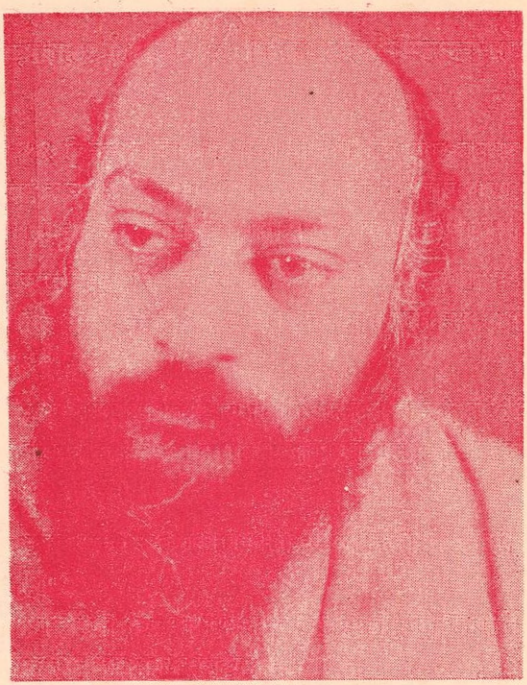

▽

२२ अगस्त, १९७२ को बम्बई में लाओत्से के ताओ-तेह-किंग पर दी गई प्रवचन-माला के अन्तर्गत प्रश्नोत्तरी से

△

एक मित्र ने पूछा है, व्हाई डू यू कॉल योरसेल्फ भगवान ? और बड़े हिम्मतवर आदमी हैं, क्योंकि उन्होंने यह भी लिखा है कि इफ यू आर रीयली बोल्ड, यू मस्ट रिप्लाई माई क्वेश्चन।

पूछा है कि आप अपने को भगवान क्यों कहते हैं ?

मैंने तो कभी कहा नहीं। लेकिन अब आप कहते हैं तो मैं कहता हूं कि मैं भगवान हूं। और यह इसलिए कहता हूं कि भगवान के सिवाय और कुछ होने का उपाय ही नहीं है। आप भी भगवान हैं। भगवान के सिवाय तो जगत में और कुछ भी नहीं है। तो अगर कोई दावा करता हो कि मैं

भगवान हूं और आप भगवान नहीं हैं, तब यह दावा अपराधपूर्ण है। मैंने तो कभी कोई दावा नहीं किया। मैंने तो कभी कहा भी नहीं। लेकिन, मैं इससे उलटी बात भी नहीं कह सकता हूं कि मैं भगवान नहीं हूं। क्योंकि वह तो सरासर असत्य होगा। इतना ही कह सकता हूं कि भगवान के सिवाय कुछ भी नहीं है। और अब मैं क्या कर सकता हूं; क्योंकि भगवान के सिवाय कुछ भी नहीं है।

आप भी भगवान हैं। इसका पता न हो, यह हो सकता है। इसका पता हो, यह हो सकता है। जिसको पता नहीं है, उसे पता करने की कोशिश करनी चाहिए। भगवान का अर्थ है अस्तित्व, शुद्धतम अस्तित्व। वह जो हम हैं अपने मौलिक स्वभाव में, उसका नाम ही भगवत्ता है। लेकिन हमारे मन में भगवान के लिए न मालूम क्या-क्या धारणाएं हैं। उनसे तकलीफ होती है। कोई सोचता है कि भगवान वह है जिसने दुनिया को बनाया। तो स्वभावतः मैंने दुनिया को तो नहीं बनाया है। इसलिए यह झंझट तो मुझ पर नहीं है।

मेरे पास पत्र आते हैं, वे कहते हैं कि अगर आप भगवान हैं तो मैं गरीब हूं—मेरी गरीबी मिटाकर दिखाइए। अगर भगवान हैं तो—मेरी आंखें खराब हैं, मेरी आंखें ठीक करके बताइए। नहीं, भगवान से मेरा वैसा भी कोई प्रयोजन नहीं है। आपकी आंखें खराब हैं, उसके लिए आपके भीतर का ही भगवान जिम्मेवार है। इसमें थोड़ा कुछ फर्क करिए। और किसी बाहर के भगवान की तरफ मत देखिए; क्योंकि जिसे भीतर का भगवान ही नहीं दिखाई पड़ रहा है, उसे बाहर का भगवान दिखाई नहीं पड़ सकता। नहीं, मैं कोई ताबीज प्रकट करने वाला भगवान भी नहीं हूं कि आप कहिए कि कोई चमत्कार दिखाइए, अगर भगवान हैं। ऐसे तो मदारियों में भी भगवान होते हैं; लेकिन भगवान मदारी होने में बहुत रस लेते दिखाई नहीं पड़ता। भगवान से मेरा अर्थ है वह जो आपकी शुद्धतम सत्ता है। यदि सब कचरा, सब व्यर्थ, असार अलग करके आपने अपने को देख लिया तो आप भगवान हैं।

कोई दुनिया बनाने की जरूरत नहीं है आपके भगवान होने के लिए। नहीं तो फिर आप कभी भी भगवान नहीं हो पाएंगे। पक्का समझ लें। किसी की आंखें ठीक करना जरूरी नहीं है आपके भगवान होने के लिए। नहीं तो फिर आप भगवान कभी न हो पायेंगे। और या फिर कोई डाक्टर भगवान हो जाएगा। भगवान होने

का अर्थ ही है : जो हमारे भीतर छिपा स्वभाव है, जो ताओ है, वह जो हमारे भीतर का अस्तित्व है, उस अस्तित्व की प्रतीति, उस अस्तित्व में प्रवेश । तो इस झंझट से भी आपको अलग कर दूं।

नाहक आपको लगता है कि मैंने क्यों अपने को भगवान कहा। अभी तो कहा नहीं था, आज मैं आपको कह देता हूं कि मैं भगवान हूं। मुझे उससे अड़चन मिटेगी, उससे सुविधा हो जाएगी। लेकिन इसका यह मतलब आप मत समझ लें कि आप कुछ और हैं। आप भी वही हैं। देर-अबेर होगी आपको पहचानने में। लेकिन चेष्टा करेंगे, तो पहचान लेंगे।

भगवान होना कोई दावा नहीं है। भगवान होना हमारा सहज स्वभाव है।

□ संकलन : *स्वामी आनंद मैत्रेय*

सभ्यता का जन्म अपने व्यवहार को शुद्ध करने से होता है, संस्कृति का जन्म अपने को शुभ करने से होता है। सभ्यता शरीर है, संस्कृति आत्मा है। जो अपनी आत्मा में प्रतिष्ठित होते हैं, वे संस्कृति को उपलब्ध होते हैं।

—साधना पथ से

परम मंगलमूर्ति
भगवान श्री के अस्तित्व में समर्पण

★

११ दिसम्बर आपका जन्मदिन है। इस शुभ अवसर पर आपको क्या भेंट अर्पण करूं ? भेंट अर्पण करने के लिये चुनाव (च्वाइस) होता है। आपने तो हमें ध्यान द्वारा चुनावरहित (च्वाइसलेस) बना दिया।

जन्मदिन के अवसर पर आदमी की बढ़ती हुई उम्र की गणना की जाती है। बढ़ती हुई उम्र की गणना यात्रा-समाप्ति का भी शायद इशारा हो सकता है।

पूज्य भगवान श्री, आपका जन्मदिन न बढ़ती हुई उम्र की आकांक्षा है, न यात्रा-समाप्ति की ओर जाने का इशारा है। आपका परम अस्तित्व एक नया जन्म है।

सूरज और चन्द्रमा का कोई जन्मदिन नहीं होता, केवल अस्तित्व होता है।

जिन्दगी की राह पर परमात्मा को भूलने वालों के लिए आपका जन्मदिन एक मौलिक स्मरण रहे।

ऐसा एक जन्मदिन था किसी का
जिस दिन पृथ्वी पर एक चैतन्य आया
बुद्ध का आनंद आया
मुहम्मद का पैगाम आया
जीसस का प्रेम आया
महावीर की वीतरागता आयी
आपके जन्म से, हे प्रभु—
फिर से कृष्ण की गीता बोली
गोविन्द की करुणा बही
जीवन जागृति की ज्योत जागी
जिस ज्योत ने और भी ज्योत जलायीं...!

□ मुरलीधर बागुल
नंदुरबार [धूलिया]

क्रांति-उत्सुक

क

द

मों

के लिए

□ चंद्रकांत न० पटेल
[आसोपालव, बड़ौदा]

▽

[सन् १९७० में जब कि सम्माननीय श्री रजनीश जी ने जाहिर कर दिया कि "अब कुआं प्यासों तक नहीं जायेगा, जो प्यासा होगा वो कुएँ के पास आयेगा।" और तब से श्री रजनीश जी ने देश भर में घूमने का, बन्द करने की घोषणा कर दी।

मैंने आचार्य श्री को खत लिख कर उनकी कई बातों की याद दिलाने के साथ-साथ देश भर में क्रांति जगाने की बातों का क्या होगा, ऐसा सवाल पूछकर उन्हें लिख भी दिया कि : "आपकी प्रतिभा कुएँ की भांति एक जगह बैठे रहने के योग्य नहीं है। आपको तो सागर की तरह देश भर में फैल कर क्रान्ति की ज्वाला प्रज्वलित करनी चाहिए।

आदरणीय श्री रजनीश जी ने प्रति-दिन दो खत के हिसाब से दो दिन में, मेरे पर चार खत लिख कर जो क्रांति की धारणाओं का विश्लेषण किया, उन चार पत्रों को यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।]

[१]

मेरे प्रिय,

प्रेम । क्रांति सिद्धांत नहीं है ।
वरन, जीने का एक ढंग है ।
क्योंकि जहां सिद्धांत हैं, वहीं क्रांति का अन्त है ।
सिद्धान्त जम गई क्रान्ति है; जैसे पानी बर्फ हो जाये ।
सिद्धान्त सदा जड़ है ।
क्रांति सदा जीवन्त है ।
इसलिए, वास्तविक क्रांतिकारी को क्रांतिवादी होने का
उपाय नहीं है !

रजनीश के प्रणाम
१५ । २ । ७१

[२]

मेरे प्रिय,

प्रेम । क्रांति भी क्रांतिकारी नहीं है ।
वह भी अब बीती हुई बात है ।
वह भी अब सुव्यवस्थित प्रतिक्रियावाद है ।
क्रांति में भी क्रांति की जरूरत है ।
इससे स्वभावतः क्रान्तिकारी भी मुझसे नाराज होंगे ।
और प्रतिक्रियावादी तो सदा से नाराज थे ही ।
इस पर मैं खूब हंसता हूं ।
जीवन के मार्ग अनूठे हैं ।
आज जो प्रतिक्रियावादी (रिएक्शनरीज) हैं, वे ही कल
क्रान्तिकारी (रिव्होल्यूशनरी) थे ।
और आज जो क्रान्तिकारी हैं, वे ही कल प्रतिक्रियावादी हो जावेंगे !
दोनों में विरोध नहीं—वरन गहरा पारिवारिक संबंध है ।
पारिवारिक ही नहीं—जैविक (बायलॉजिकल) भी ।
और मजा तो यह है कि क्रांतिकारी प्रतिक्रियावादियों के पिता हैं !

रजनीश के प्रणाम
१५ । २ । ७१

[३]

मेरे प्रिय,

प्रेम। क्रांति सत्ता नहीं बन सकती है।
क्रांति की नियति सदा ही विद्रोह (रिबेलियन) है।
सत्ता बनते ही क्रांति प्रतिक्रियावादी हो जाती है।
क्योंकि सत्ता के निहित-स्वार्थ हैं।
सत्ता सदा ही क्रांति-विरोधी है—स्वरूपत: ऐसी अनिवार्यता है।
और क्रांति सत्ता-विरोधी है।
यह उसका आंतरिक स्वरूप है।
यह अस्तित्वगत विरोध है और इसे न समझ पाने से बड़ी
उलझनें पैदा होती हैं।
क्रांतिकारी को सत्ता का खयाल ही छोड़ देना चाहिए।
क्रांतिकारी सत्ता के बाहर और सत्ता-विरोधी रहकर ही
जीवन को गति दे सकता है।

रजनीश के प्रणाम
१६।२।७१

[४]

मेरे प्रिय,

प्रेम । जानता हूं भलीभांति कि क्या मुझे करना चाहिए ।
और वही कर भी रहा हूं ।
लेकिन, प्रत्यक्ष कार्य से कुछ भी नहीं हो सकता है ।
परोक्ष के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है ।
क्रांति भी सीधी नहीं हो सकती है ।
परम्पराओं में अत्यधिक उलझाव के कारण ।
घोषणापूर्वक भी कुछ करना संभव नहीं है ।
मात्र शहीद होने का मजा लेना हो तो बात दूसरी है !
अत्यन्त धैर्य की आवश्यकता है ।
और परोक्ष होने के साहस की भी ।
शहीद होने के रस से भी बचने की अत्यधिक जरूरत है ।
स्थिति जटिल है—असाधारण रूप से जटिल ।
इसलिए, अत्यन्त जटिल पगडंडियों से गुजरना पड़ेगा ।
राजपथ से ज्यादा धोखा किसी और चीज में नहीं है ।

रजनीश के प्रणाम
१६ । २ । ७१

स्मृतियों में तथाता की झलक

श्री रजनीश जी एक बार भावनगर पधारे थे। बिन्दु-निवास में मैं उनको मिलने गई थी। मैं कुछ बातचीत कर रही थी, तब कोई आदमी आके कुर्सी पर बैठ गया। कुर्सी कुछ फोल्डिंग जैसी थी और डगमगाती थी। वह आदमी दूसरी कुर्सी पर बैठ गया। इतने में डॉक्टर आये और उस कुर्सी पर बैठने लगे। मैंने कहा, आप वहां मत बैठें, गिर जायेंगे। तब आचार्य जी बोले, "अरे! तू ठीक कर दे नहीं तो कोई और गिरेगा।" मैंने ठीक करने की कोशिश की। थोड़ी ठीक-ठाक करके मैं उस पर बैठने लगी तब डॉक्टर बोले, तू भी वहां मत बैठ, गिर जायेगी। मुझे भी थोड़ा डर था ही, लेकिन आचार्य जी फिर से बोले, "नहीं, वह गिरनेवाली नहीं है। आप मत घबड़ाईये, वह नहीं गिरेगी।"

न जाने कितने अर्थ भरे होंगे इस छोटे से मार्मिक वाक्य में! आज भी मेरे हृदय में यह वाक्य उतना ही ताजा अंकित है, "वह गिरने वाली नहीं है।" और मैं हैरान हूं कि, मेरी अपनी नजर में तो, मेरा गिरना ही गिरना है। लेकिन हां, इस घटना के बाद जब गिरती हूं, जहां भी गिरती हूं— तत्क्षण सहसा चौंक के खडी हो जाती हूं और जागृत हो के खुद की धूलि झाड़ देती हूं। प्रभु रजनीश को धन्यवाद देकर अनुग्रह से भर जाती हूं।

□ *मीरा*
जूनागढ़

(यहां डाक्टर का सम्बोधन मा योग मीरा के पतिश्री के लिये है)

क्या दे दिया है तूने ?

●

क्या दे दिया है तूने मुझे !

दुःख भी है दुःख नहीं
सुख भी है सुख नहीं

आनंद से उर भर दिया है !

जैसा भी हूं, जो हूं, मैं जहां हूं
पाता हूं क्या ! क्या कहूं ! मैं कहां हूं

जादू ये कैसा कर दिया तूने !
दुःख भी है दुःख नहीं.....!!

अपने पराये में मन भरमाया था
विरथा की बातों में, मन उलझाया था

बोध ये, जब से देदिया तूने !
दुःख भी है दुःख नहीं.....!!

क्या कुछ न पास था पर, सब से अजान था
जो कुछ नहीं था मेरा, उसका ही मान था

मुझको मिलाया मुझी से जब से !
दुःख भी है दुख नहीं.....!!

□ *'आकुल'*
जबलपुर

✠

सम्यक् दर्शन (राइट अवेयरनेस) ध्यान की विधि है। देखना है, मात्र देखना है, जो बाहर है उसे और जो भीतर है उसे भी। बाहर वस्तुयें हैं, भीतर विचार हैं। इन्हें देखना है, ऐसे ही जैसे कि हम सब निष्प्रयोजन उन्हें देख रहे हैं। कोई प्रयोजन नहीं है, बस देख रहे हैं। एक साक्षी मात्र हैं—तटस्थ साक्षी हैं और देख रहे हैं। निरीक्षण, यह सजगता क्रमशः शान्ति में, शून्य में, निर्विचार में ले जाती है। करें और जानें।

[भगवान की प्रथम कृति साधना-पथ से]

✠

समर्पण की ओर
क द म

अचानक महाकोशल महाविद्यालय के एक छात्र से भेंट हुई, वे भगवान श्री के दर्शनशास्त्र के ही छात्र थे, वे कुछ समय के लिए मेरे ही छात्रावास में प्रवेश लिये। उनकी भेंट मुझसे नहीं, मेरे ही एक दोस्त से हुई, जो उस वक्त कालेज में थे, और मैं हाईस्कूल में था। भेंट पहली दफा डायनिंग रूम में हुई, हम दोनों बैठे ही थे कि उनका प्रवेश सहज-सरल, बड़ी साधारण वेश-भूषा में हुआ। मेरे दोस्त जो स्वभावतः चंचल थे, कुछ तर्क पूर्ण प्रश्न कर उठे : उनका उत्तर सरल-सीधा और गहरा था। मैं सिर्फ दोनों को सुन रहा था।

प्रतिदिन दोनों बहस करते थे, और अन्त में वे भगवान श्री के संबंध में चर्चा करते, कि वे किस तरह रहते हैं, बस उन दोनों को सुनते-सुनते ही भगवान श्री को देखने और सुनने की इच्छा हुई। पहली दफा भगवान श्री को जबलपुर—सर्वधर्म सम्मेलन में देखा और सुना, उस वक्त मैं कालेज में जा चुका था। फिर तो जब भी जहां भी जिस समय प्रवचन होता, हम दोनों कक्षाएं छोड़कर पहुंचते, पता नहीं उनमें क्या है ? जो एक बार सुनता, तो दूसरी बार चूक नहीं सकता। अध्यापन कार्य छोड़ने के बाद भगवान श्री ने अपना निवास बम्बई को बनाया। १९६९ में, मैंने एम. ए. किया ही था कि भगवान श्री १९७० के लगभग बम्बई चले गये। मैं साधना आदि में प्रवेश नहीं पा सका। तब से न उनका प्रवचन ही मिलता है और न ही दर्शन, फिर भी आज उनकी वाणी पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलती ही है, लगता है—बस वे निकट ही, पास ही हैं।

आज जब भगवान श्री की दीर्घ आयु की कामना करता हूं, तो सहसा स्मरण होता है उनके उस छात्र का, जिनने मुझे, भगवान श्री की ओर एक कदम चलने को विवश किया, भगवान मुझे ऐसा साहस दे कि सदैव के लिए मैं भगवान में समर्पित हो जाऊं।

□ ठा. राजेन्द्र सिंह
मु. पो. कुरखेड़ा
जिला : चांदा [महा०]

अमृत-पर्व

मेरे प्रिय,

प्रेम। आपका पत्र पाकर आनंदित हूं।

आपने लिखा है कि हजारों की संख्या में गायत्री जाप किया लेकिन काम क्रोधादि में कोई अंतर नहीं आया है।

आयेगा ही क्यों ?

आपके काम-क्रोधादि के लिए बेचारी गायत्री तो जिम्मेवार ही कहां है ?

कृपा करके गायत्री को और न सतावें तो अच्छा है।

काम को, क्रोध को समझें, पहचानें।

उनसे लड़ें न।

उनके प्रति जागें।

उनका दमन न करें।

जपादि से दमन होता है।

विसर्जन नहीं।

रुपांतरण नहीं।

और, काम-क्रोधादि के शत्रु बने क्यों बैठे हैं ?

शत्रुता से कोई भी समाधान नहीं है।

स्वयं की शक्तियों से लड़ना आत्मघात है।

और काम-क्रोध को स्वयं से भिन्न भी न समझें।

वे और आप दो नहीं हैं।

आप ही काम हैं, आप ही क्रोध हैं।

इसलिए लड़ेगा कौन और लड़ेगा किससे ?

वैसी चेष्टा स्वयं के जूतों के फीते से स्वयं को ही ऊपर उठाने की चेष्टा है।

ऐसी भूल न करें।

तथाकथित धार्मिक आदमी की यही बुनियादी भूल है।

काम उठे तब उसे देखें।

अर्थात काम ग्रस्त स्वयं को देखें।

क्रोध उठे तब उस पर ध्यान करें।

अर्थात स्वयं की क्रोध लीला के साक्षी बनें।

ऐसा दर्शन दृश्य का अतिक्रमण बन जाता है।

और जो ऊर्जा काम में, क्रोध में प्रगट होती थी, वह नये आयामों में गतिमान हो जाती है।

लेकिन मेरी न मानें।

करें और देखें।

रजनीश के प्रणाम

९।६।७०

[श्री रामकृष्ण शर्मा, मांगरोल जिला कोटा को लिखा गया एक पत्र]

समझ ही बड़ा राज है

आनंद है

मैंने बहुत-सी बोध-कथायें पढ़ी हैं, साधुओं को सुना है। समझाते हैं, वो कहते हैं—आत्मज्ञान गहन है। सच्चिदानंद को समझना ही सार है। मगर मैं आनन्द को ठीक से यथार्थ में समझ नहीं पाया।

जब से मैंने भगवान श्री रजनीश को सुना तब से समझ पाया कि आनन्द हुआ जा रहा है, हर क्षण घटित हो रहा है। क्षण को समझने से ही "आज" आनन्द उपलब्ध हो जाता है। क्षणों के जोड़ का नाम ही "आज" है। कल आज में छिपा है, जैसे कि कल खिलनेवाला फूल आज कली में छिपा है। सुबह होती है जागृति होती है, कल मिट जाता है। आज उपस्थित रहता है, ऐसा हुआ जा रहा है। "हुआ जा रहा है" यह समझ में आ जाय, तो जीवन जागृत हो जाता है। इसे समझना ही सार है, "समझ ही बड़ा राज है—आनन्द है।"

यह सब कब समझा जाय, यह सब तब समझा जा सकता है—जब भगवान रजनीश जैसी विभूति से मिलन हो जाय, ऐसी विभूति की वाणी का संगम हो जाय, तब तो बगिया खिल जाती है, माली जागृत

□ *राजाभाई रणछोड़भाई पनारा*
दूधरेज, डि० जूनागढ़ (गुजरात)

हो जाता है।

कोई भी विभूति हो, उसकी वाणी किताब में लिखी गई हो लेकिन बोलने वाली विभूति समीप न हो तो लोग कहते हैं कि, बोलने वाला कहां ? पढ़ने से क्या ! मगर मैं यह समझ पाया कि कोई भी विभूति हो, उसकी लिखी गई बोली समझ में आ जाय, तो "बोली" ही विभूति को समीप कर देती है।

मैं भगवान श्री की बोली किताब में पढ़ता हूं, युकांद में पढ़ता हूं, ज्योतिशिखा में पढ़ता हूं, तो मुझे ऐसा लगता है कि भगवान मेरे समीप बोल रहे हैं और मैं सुन रहा हूं—ऐसा मुझे लगता है।

भगवान की "बोली" हृदय-स्पर्शी है। व्यक्ति को जगाने वाली है। मगर व्यक्ति ख्याल से समझे तो उसकी आत्मा जागृत हो जाय, द्रष्टा जग जाय, तब आनन्द उपलब्ध हो जाता है। उस आनन्द का कहना ही क्या ! भगवान श्री कहते हैं कि उसको कहा नहीं जाता जो "हुआ जा रहा है" उसे देखें और समझें। इस समझ में कुछ खोया नहीं जाता। सब कुछ पा लिया जाता है। तो, यह मत पूछें, यह मत कहें—जो "हुआ जा रहा है" उसे देखें। उसे देखने में व्यक्ति जागृत हो जाता है, और "आनन्द" उपलब्ध हो जाता है।

मेरे देखे, भगवान की वाणी को ख्याल से समझा जाय, तो यह सब समझा जाता है, समझ ही सार है, "समझ ही बड़ा राज है, आनंद है।"

●

रमण को कोई पूछता था कि मैं
सत्य के जानने को क्या करूं ?
उन्होंने कहा : 'जो जानते हो,
वह सब भूल जाओ !'

जीवनमुक्त से एक निवेदन

▽

जो एक बार अध्यात्म में डूबा—
परमात्म-अनुभव से पुलकित हुआ
संसार उसके लिये व्यर्थ हो जाता है—
वह यहां लौट कर फिर नहीं आना चाहता,
पर वह संसार के लिए बहुत उपयोगी है—बहुत
उससे बढ़कर और कोई चीज जरूरी नहीं हो सकती
सद्गुरु भी एक बार आकर रह जाता है
वह बार-बार क्यों नहीं आता
अपने लिये न सही संसार के लिये
उसकी मुक्ति का संसार के लिये बार-बार उपयोग क्यों नहीं होता ?

मानाकि इस संसार में उसे जहर पीना पड़ेगा
पीड़ा सहनी होगी
पर इससे उसकी मुक्तावस्था में कुछ भी फर्क न पड़ेगा
और आत्म यात्रियों को गति मिल जायेगी
उनकी चेतनाओं का ऊर्ध्वगमन हो जायेगा
विश्व करवट लेगा—जागने लगेगा
विश्व-चेतना आन्दोलित हो उठेगी
ये शरीर बद्ध मुक्ति-बिहारी चाहें तो
विश्व की ऐसी दुर्गति कभी न होने दें
विश्व में इतना अज्ञान-तिमिर न बढ़ने पाये
विश्व को ऐसे दुर्दिन नहीं देखने पड़ें

क्या ऐसा नहीं हो सकता—
कि मुक्त चेतनाएं शरीर रहते
किसी वासना की खूंटी से बंधकर
हर बार नये जन्म की कामना से भरती रहें ?

काश ! ऐसा होता
तो न जाने एक साथ कितनी मुक्तात्माओं की उपस्थिति में
यह धरती आकाश छूने लगती
हवा ही बदल जाती इस धरती की
एक मुक्त आत्मा (रजनीश) इतना कर सकती है
तो कई मिलकर कितना कुछ नहीं कर जातीं

हे प्रभु (रजनीश) ! कोई सुने न सुने यह निवेदन
पर तुम जरूर सुनना
फिर-फिर आना, आते ही रहना
इस धरती की पीड़ा अपार है
इसे दूर करने के लिए यदि तुम आते रहोगे
तो तुम्हारा क्या बिगड़ जायेगा

माना कि इस दुनिया के लोग अधिकतः अन्धे और बहरे हैं
पर तेरी कृपा रही तो
कभी तो इन्हें भी दृष्टि मिल ही जायेगी
कभी तो ये भी तुम्हारी पुकार सुन ही लेंगे
पर यह तभी सम्भव है
जब तुम बार-बार अवतरण करो
मुझे चिन्ता नहीं है अपनी—इस जन्म की
क्योंकि इस समय तुम हो
पर तुम्हारे बाद इस धरती का क्या होगा
इस धरती को जीवन्त व्यक्तित्व चाहिये—
एक नहीं अनेक

ओ मुक्ति-दिशा के यात्रिओ !
तुम भी सुनो—
मुक्त होने पर अपने आनन्द में ही लीन मत हो जाना
धरती का दर्द तुम्हारे आनन्द से बहुत बड़ा है
देखो, स्वार्थी न बन जाना
जैसे रजनीश आये हैं—आनन्द लाये हैं
तुम भी संसार के किसी धागे से बंधकर
करुणा से प्रेरित होकर
हर बार फिर लौट आना—अपनी सुवास बिखेर जाना !!

□ *स्वामी योग प्रीतम*
प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग
राजकीय महाविद्यालय
भीलवाड़ा (राजस्थान)

एक पत्र : एक ज्योति

मानसेवी सम्पादक-मण्डल
'युक्रान्द'

श्री भगवान रजनीश जन्म-दिवस ११ दिसम्बर ७३ के पावन दिवस पर युक्रान्द-परिवार तथा पाठकगणों को शुभ-कामनायें।

मेरा इस पत्रिका से सम्बन्ध जून १९७३ से हुआ, जिसके लिए मैं श्री ओमप्रकाश जी शर्मा (सहारनपुर) का हृदय से आभारी हूं—जिन्होंने मुझे इस दीप स्तंभ का एक अंक दिखाकर मेरे अंधे जीवन में दीप जला दिया।

श्री भगवान रजनीश जी के लिए मैं क्या लिखूं मेरी गंवार कलम के सामर्थ्य से बाहर की बात है। शब्द ही नहीं हैं मेरे पास। हां, मन में एक अन्धड़ है, जो कागज पर नहीं उतर सकता।

पत्रिका के सम्पर्क में आने से पूर्व जो मैल मन पर था वो धुला-धुला सा लगता है—अब विपत्ति, दुःख, भय, सम्मान, तिरस्कार व हर्ष सब समान से लगते हैं।

श्री भगवान जी द्वारा दिये गये प्रवचन संकलनकर्त्ताओं द्वारा जो युक्रान्द में प्रकाशित होते हैं—उनके पठन मात्र से जब यह हाल है, तो प्रत्यक्ष में दर्शन एवं प्रवचन का क्या प्रभाव रहता होगा—प्रत्यक्षदर्शी ही जान सकता है।

'कृष्ण व गीता' पर दिये गये प्रवचन किस नास्तिक को आस्तिक नहीं कर देंगे।

अन्त में, 'युक्रान्द' एक पत्रिका नहीं—एक दीप स्तम्भ है जो घर-घर में जलना चाहिए, ताकि घर-घर, मन-मन में छाया होने वाला अंधेरा दूर हो सके।

श्री रजनीश कृपा से आपके संपादन में यह पत्रिका घर-घर, हर मन्दिर में पहुंच सके।

□ *रामनाथ शर्मा*
शर्मा बूट हाऊस
जवाहरगंज, गगोंह (सहारनपुर)

समर्पित हूं

प्रभु श्री आना चाहती हूं तुम्हारे पास
पर कैसे आऊं ?
इस अहंकारी, लोभी, क्रोधी मन से
वर्ष भर से तड़फ रही हूं
तुम्हारे लिये
ध्यान में जाती हूं सांझ में रात्रि में
लगता है प्रभु
तुम मेरे ही निकट हो
और अन्ततः
वह अवसर भी आवेगा जब मैं
तुम्हारे समक्ष
गैरिक वस्त्र में रहूं
विषय वासनाओं में जकड़ी हुई हूं
जन्मों-जन्मों से
हर पल मुझे कुछ सूझता है
पर न जाने क्या होता है
तुम्हारी दिव्य आभा आ पड़ती है
मेरे सामने
और मैं एक प्रकाश-सागर में
भर जाती हूं
आनन्द में, प्रेम में
परन्तु प्रभु श्री
तभी टूट जाते हैं सपने
और खुलती हैं आंखें
सामने तुम्हें न पाकर
तड़पता है मन
फिर से जी चाहता है
चली जाऊं उसी स्थिति में
परन्तु प्रभु !
कर्म हैं जन्मों-जन्मों के
भोग रही हूं हर पल
परन्तु प्रभु !
तेरे पावन स्पर्श के कारण
अब हर पल भी
आनंद और प्रेम बनता जा रहा है
अपार है तेरी अनुकम्पा
जो मुझ जैसी अज्ञान को
ध्यान का मार्ग दिखाया
अपार है अनुकम्पा तेरी
मैं तुझको धन्यवाद देती हूं
तेरी आभारी हूं
मैं पूर्ण समर्पित हूं
सिर्फ मुझे माला, वस्त्र व नाम
लेने की देरी है
समर्पित हूं, समर्पित हूं ।

कुमारी संध्या मेहता
द्वारा : जयन्तीभाई मेहता
१२, नसिया रोड, इन्दौर

ज
य
रजनीश हरे !

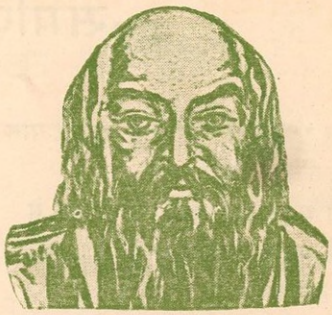

जय रजनीश हरे, भजो हे भाई, जय रजनीश हरे ।
पूर्व जन्म के सिद्ध-पुरुष प्रभु, करुणावश ठहरे ।।
जय रजनीश हरे ।।

जग में निशा, भरम, स्वारथ सब तन्द्रा-रत झगड़े,
पर-उपदेश-कुशल हैं पर-हित वाक्-चतुर हैं बड़े ।
भजो हे...।।

कोई विज्ञानी, धर्म-विमुख कोई, कोई पन्थी हैं खड़े,
बाहर तीन, किन्तु अन्तर में तनिक न फर्क पड़े ।
भजो हे...।।

हालत ऐसी देख जगत की दृष्टा-दिल उमड़े,
दी पुकार आश्वासन-पूरित, प्रेम से हाथ धरे ।
भजो हे...।।

श्रमण-साधना संग ध्यान-पथ, जीवन-लाभ थिरे,
अभय अडिग निज देह-बोध तजि, साक्षी-भाव धरे ।
भजो हे...।।

बीज-रूप प्रभु सब घटवासी, सत्य, न गलत पड़े,
ले अंकुर फल-फूल खिले पथ, शून्य-रूप निखरे ।
भजो हे...।।

मृत्यु सिखाते कृष्णार्जुन-सा गीतामृत कहे,
अहं-शून्य "भगवान-श्री" कह, प्रेमी रटत फिरे ।
भजो हे...।।

मुरलीधर हे गोपाला ★★★

मुरलीधर हे गोपाला, जग सिरजन करनेवाला ।
आरत जन गिर गिर उठ धावें, पड़ा भरम से पाला ।।
।। मुरलीधर० ।।

पालनकर्ता तू ही सबका, सुन तो हमने रक्खा है,
मूर्च्छा ने धर पकड़ा कसके, भान नहीं कुछ पक्का है,
तुझे छोड़ किसकी क्या हस्ती, ऐसा फन्दा डाला ।
।। हे मुरलीधर० ।।

हे करुणाकर भक्त-वत्सलम्, प्रेम-रूप अवतारी है,
कृपा पात जन महाभाग की, बाधा तू ने टारी है,
आज ताण्डवी अन्धकार को, मेटो, करो निहाला ।
।। हे मुरलीधर० ।।

□ *स्वामी श्याम सरस्वती*
जीवन जागृति केन्द्र
सहरसा--पूरब, बिहार

[उपर्युक्त दोनों भजन सहरसा, बिहार में आयोजित ध्यान-शिविर में प्रस्तुत किये गये। प्रारम्भ में 'वंदन-गान' और दूसरे भजन से 'प्रभु - कृपा - चिकित्सा में ईश आह्वान' किया गया ।]

अन्तर्यामी

भगवान श्री रजनीश जी के लिए कुछ लिखना चाहती हूं, मगर उस अनादि-असीम के लिए लिखना बहुत ही कठिन है। फिर भी मूर्ख मन मानता नहीं कुछ लिखना चाहता है। भगवान श्री के लिए लिखना तो असम्भव है, लेकिन जबसे भगवान श्री का मिलन हुआ है, मेरे साथ काफी घटनायें घटी हैं, जीवन तो जैसे बदल ही गया है।

एक घटना का यहां पर मैं वर्णन करती हूं। सन् १९७२, तारीख ११ दिसम्बर भगवान श्री का जन्म-दिवस, सुबह कोई पौने सात बजे होंगे। मैं ध्यान में बैठी, तो ध्यान में भगवान श्री का चेहरा दिखाई दिया। गले में फूलों की मालाएं और माथे पर तिलक लगा हुआ। वह मोहनी मूरत देख कर प्रेम के आंसू छलक आए, और मन ने कहा : प्रभो ! मैं तो शायद इस जन्म में इस उत्सव पर कभी नहीं आ पाऊंगी पर आप अपनी फोटो तो भेज सकते हो। उसी क्षण मन ने फिर कहा : प्रभो ! आपके प्रेमी तो बहुत हैं, मैं तो उन प्रेमियों की चरण-धूलि भी नहीं हूं। सब प्रेमी भी यही चाहते होंगे, आप किस-किस को फोटो भेजेंगे ? फिर मैं ध्यान से उठ गई।

चार दिन के बाद मैं बाहर पोस्टमैन की आवाज सुनकर डाक लेने गई तो क्या देखती हूं—भगवान श्री की वही छबि जन्म-दिवस वाली, वही मालाएं, वही तिलक—यह अद्‌भुत घटना देखकर मेरी क्या हालत हुई उस समय, मैं वर्णन नहीं कर सकती। मेरा रोयां-रोयां नाच उठा, हृदय धड़क उठा, पांच-दस मिनिट तो मैं उस छबि को ही देखती रह गई।

क्या यह सच है, अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था, जो सच था वही सच था। और मेरे मुख से अनायास ही निकला—हे मेरे प्रभु अन्तर्यामी, करुणा के सागर, दीनदयालु आप भी असीम हैं, आपकी लीला भी असीम है। भगवान रजनीश को क्या कहें यह समझ के बाहर है। अन्त में भगवान श्री रजनीश जी के चरणों में मेरा बार-बार प्रणाम। मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

□ *श्रीमती तृप्ता सींगल*
श्याम बिल्डिंग, मोतीनगर, लखनऊ

अज्ञात-बोध

हे प्रभु ! ऐसा खो गया हूं
तेरे सागर में
कि डूबता ही चला जाता हूं।
सारा कचरा—रोना-हंसना
सब फेंकता जाता हूं
और प्रति क्षण नया जन्म पाकर
तेरे चरणों में
समाता जाता हूं।

□ *हीरा बाबू*, जबलपुर

●

भगवान श्री के चरणों में

तुमने इस मन को बदल दिया प्रभुवर ऐसे।
लोहा पारस परस से स्वर्ण बन जाये जैसे॥

□ *स्वामी जगदीश भारती*

जिंदगी श्रृंगार तुमसे

गीत, नज्म और गजलों का अनूठा संगम

गीतकार : 'आकुल'

पृष्ठ १०४ □ आकर्षक प्लास्टिक कवर □ मू. ५ रु.

डाक-व्यय निःशुल्क

प्राप्ति स्थल : ज्योत्स्ना प्रकाशन
७९०, राइट टाउन, जबलपुर (म. प्र.)

★★★ करुणा-सागर ★★★

करुणा के सागर मेरे भगवन्
कभी तो हम पर कृपा करेंगे
मैं भी ये प्रण कर चुकी हूं
कि नाम उनका जपा करूंगी

ऐसी लगा दी संग मोह-माया
जो ज्ञान-गौरव था सब भुलाया
दिखाया गीता में तुमने मारग
उसी पे अब मैं चला करूंगी

ये मन में आता कि पाप हूं मैं
बहुत सह रही जग-त्रास हूं मैं
भय मेरा प्रभु जो छुड़ा ही देंगे
न सांस जायेगी व्यर्थ मेरी

प्रभु कीजै पूरण ये मेरी विनती
लगा दो अब पार मेरी नैया
मिलेगा अब तुमसे ही किनारा
इस नाव के हो तुम्हीं खेवैया

□ *श्रीमती सिया साहा*
जबलपुर

पत्र-पत्रिकाएं

	प्रकाशन स्थल	वार्षिक मूल्य
१ युक्रांद (हिन्दी मासिक) :	C/o युक्रांद प्रकाशन, ७९०, राइट-टाउन, जबलपुर	१२-००
२ आनंदिनी (हिन्दी-मासिक):	C/o सुप्रीम वूलन मिल्स, इंडस्ट्रियल स्टेट, लुधियाना	१०-००
३ योग दीप (मराठी पाक्षिक):	C/o जीवन जागृति केन्द्र, १०१, टिम्बर मार्केट, पूना	१०-००
४ SANNYAS (English Bi-Monthly)	C/o Selprint, A. Z., Industrial Area, Fergusson Road, Lower Parel, BOMBAY : 13	१८-००
५ "रजनीश-पत्रिका" (गुजराती मासिक)	जीवन-जागृति-केन्द्र, भवानी चेम्बर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद–९	१०-००

साहित्य प्राप्ति हेतु संपर्क स्थल :

(१) ईश्वर-समर्पण, जीवन जागृति केन्द्र, ३१, इजरायल मोहल्ला, भगवान भुवन, मस्जिद बंदर रोड, बम्बई ९ : फोन : ३२७००१

(२) स्वामी सत्य बोधि सत्व, जीवन जागृति केन्द्र, भवानी चेम्बर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-९, फोन : ७६५७३

(३) स्वामी अमृत बोधि सत्व, जीवन जागृति केन्द्र, १०१, टिम्बर मार्केट, पूना-१, फोन : २४१४८

(४) स्वामी आनन्द गौतम, जीवन जागृति केन्द्र, ४१६, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर-१

(५) अरविन्द कुमार, जीवन जागृति केन्द्र, ७८१, राइट-टाउन, जबलपुर फोन : २९५७

(६) स्वामी दयाल भारती, जीवन जागृति केन्द्र, कबूला पुल, सागर

(७) स्वामी आनन्द वेदांत, घंटाघर, नीमच (म. प्र.)

(८) स्वामी निकलंक भारती, विजय गृह निर्माण सामग्री भंडार, गाडरवारा

(९) मोतीलाल बनारसीदास, बुक-सेलर्स एवं पब्लिशर्स बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७

(१०) मोतीलाल बनारसीदास, अशोक राज पथ, पटना-४

● मानसेवी सम्पादक-मण्डल ●
अरविन्दकुमार □ सुश्री डा. उर्मिला □ 'आकुल' राजेन्द्र □ आलोक पाण्डे
व्यवस्थापक : स्वामी धर्म सरस्वती

नवम्बर '७३

भगवान रजनीश का दिव्य आवाहन

★ माउण्ट आबू साधना-शिविर ★

दिनांक ११ जनवरी, ७४ की संध्या से १९ जनवरी, ७४ की संध्या तक

(भगवान रजनीश के भगवत् मार्ग निर्देशन में)

— : अंग्रेजी भाषा में :—

प्रवचन विषय : *अक्षय उपनिषद्*

कार्यक्रम : सुबह एवं रात्रि प्रवचन
सुबह सक्रिय ध्यान
मध्याह्न : कीर्त्तन ध्यान
रात्रि : त्राटक ध्यान

प्रवेश शुल्क : १००/- रु० स्थल : *बीकानेर पैलेस होटल*

(इस शिविर में केवल २५० साधकों को ही प्रवेश मिलेगा)

अन्य विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

जीवन जागृति केन्द्र
भवानी चेम्बर्स, आश्रम रोड,
अहमदाबाद— ९
फोन : ७७५७३

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक : अरविन्द कुमार, ७९०, राइट-टाउन, जबलपुर.
मुद्रण : अशेष प्रिंटर्स, ७८१, राइट-टाउन, जबलपुर. ☎ 2957 P.P.